''परिस्थिति से प्रभावित नहीं होने वाला रमणीय होता है ''

– आचार्यश्री महाप्रज्ञ

बीदासर, 30 मार्च।

तेरापंथ भवन के श्रीमद्मघवा समवसरण में धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्यप्रवर ने फरमाया कि परिस्थिति और प्रभाव ये दो शब्द हैं। कई लोग इतने ऊंचे पहुंच जाते हैं कि वे परिस्थिति से प्रभावित नहीं होते और कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते हैं जो परिस्थिति से प्रभावित हो जाते हैं। हंसने की परिस्थिति है तो हंसने लग जाते हैं और रोने की परिस्थिति में रोने लग जाते हैं। परिस्थिति का और भावों का निकट का संबंध उनमें होता है।

आचार्यप्रवर ने प्रदेशी राजा और केशी स्वामी के प्रसंग में आज फरमाया – ''जब प्रदेशी जाने लगा तब केशी स्वामी ने कहा प्रदेशी अब तुम जा रहे हो किंतु एक बात का ध्यान रखना। अभी तुम रमणीक, सुंदर हो गये हो, किंतु सामने जो परिस्थिति आएगी उसमें अनेक प्रकार की बातें भी आएगी उस समय अरमणिक मत बन जाना। क्योंकि प्रदेशी राजा ने इस मत पर आ गया था कि जीव अलग है शरीर अलग है। घर जाने पर बहुत सारे तुम्हारे सलाहाकर, मित्र आएंगे और वे कहेंगे आज एकदम बदल गए तुमने अच्छा नहीं किया ऐसा कहने वाले भी मिलेंगे। केशी स्वामी ने उदाहरण देते हुए कहा था कि जैसे एक उद्यान और सारे वृक्ष हरे भरे हैं, फल लगे हुए होते हैं, भिनी–भिनी सुगंध आती है और लोग भी वहां भ्रमण के लिए जाते हैं तो उनका मन भी आहल्लादित होता है वह उद्यान रमणीक होता है। जब पतझड़ आता है पत्ते झड़ जाते हैं, फल भी नहीं रहते और वे सुखे रहते हैं वहां लोग जाना पसन्द नहीं करते और वहां बैठने वाले पक्षी भी उड़ जाते हैं। दो अवस्थाएं हो गई कि एक समय उद्यान रमणीक था और एक समय ऐसा आया कि उद्यान अरमणीक बन गया। केशी स्वामी ने दी प्रदेशी को सदा हरे–भरे उद्यान की तरह सुन्दर, रमणिय, आकृषक बने रहने की सलाह दी। ''

युवाचार्यप्रवर ने फरमाया कि साधक को उणोदरी का अभ्यास करना चाहिए। उणोदरी का अर्थ है कमी रखना अर्थात पेट को खाली रखना, सीमा करना है। शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से उनोदरी का बड़ा महत्त्व है। भोजन परिमित व अल्प होगा उतना ही शरीर स्वस्थ रहेगा।

इस अवसर पर समण सिद्धप्रज्ञजी एवं समण मुदितप्रज्ञजी की लगभग दो माह गुजरात अंचल की यात्रा परिसंपन्न कर पूज्यवरों के दर्शन करते हुए आचार्यप्रवर को यात्रा के दौरान प्रेक्षाध्यान के सफल शिविरों की रिपोर्ट एवं आभार पत्र आचार्यप्रवर को समर्पित किया।

अशोक सियोल

9982903770